व्या०यान - ५

स्नातक तृतीय खंड

मैथिली कथा साहित्यक विकास

मैथिली कथा साहित्यक प्रारम्भिक कालमे मुख्य रूपसँ सामाजिक कुरीतिक आधार पर कथा लिखल गेल। तत्कालीन समयमे मिथिलाक समाजसँ पैघ सामाजिक समस्या वैवाहिक व्यवस्था छल। बाल विवाह, बहु विवाह, बेमेल विवाह आदि प्रथा पराकाष्ठा पर छल। प्रारम्भिक कथाक विषय वस्तुक प्रसंग विभिन्न विद्वान लोकनि अपन मत स्पष्ट कयलनि अछि। डॉ० दिनेश कुमार झा अपन इतिहास विषयक पोथीमे विस्तार सँ आरम्भिक कथा सभक विषय वस्तु पर चर्चा कयलनि अछि।

"एहि कालक आरम्भिक कथा सभ मात्र समाज सुधारक दृष्टिकोण सँ लिखल गेल आओर एकर प्रमुख कारण छल विभिन्न पत्र-पत्रिकाक सम्पादक लोकनिक आग्रह। श्री मैथिलीक सम्पादक द्वारा कोना कथाकार लोकनिकेँ विषयक सीमामे बान्हि देल गेल छल तकर परिचय एहि सूचीसँ भेटि सकैत अछि - (1) विवाह ओ उपनयन (2) श्राद्ध मिथिलाक उदारता सूचक मात्र किन्तु अपव्यय व्यर्थ (3) संस्कृत टोल (4) राज दरभंगाक रक्षा ओ बाबू लोकनिक विद्या, आस्ति-कता आदि अंशक रचनात्मक समालोचना द्वारा

2

जीवनी (5) शास्त्रार्थ आदि अछि। एहि प्रसंग डॉ० भीमनाथ झा कहैत छथि — मैथिलीक आरम्भिक कथाक मुख्य स्वर सामाजिक कुरीतिक प्रति प्रहार छल। फलतः तत्कालीन कथामे लेखकक सुधारवादी प्रवृत्तिक झलक भेटैत अछि।

मैथिली कथा साहित्यक प्रारम्भिक कालक प्रमुख कथाकार लोकनिमे कुमार गंगानंद सिंह, किरण जी, लक्ष्मीपति सिंह, भुवन जी, भुवन जी, हरिमोहन झा, योगानन्द झा, उमानाथ झा, व्यास जी, प्रबोधनारायण चौधरी आदि प्रमुख छथि। आरम्भिक कथाकार लोकनिक कथाक विस्तार पूर्वक अध्ययन एहि तथ्यकेँ स्पष्ट करत जे मैथिलीक आरम्भिक कथा, कथा साहित्यक विकास कोन रूपे प्रतिनिधित्व करत।

क्रमशः

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
विश्वेश्वर सिंह जनता महा०
राजनगर, मधुबनी